राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

भूमिका

इस संसार में जहाँ कोई चीज़ स्थिर नहीं है अथवा सब कारख़ाना मिथ्या और नाशमान और छिन २ में बदलता रहता है. तहाँ बहुत करके देखा जाता है कि हर एक जीव दुख से घबराता और सुख को चाहता है—और जो कि सब जीव नहीं जान सकते कि असल सुख क्या है—इस सबब से इन्द्रियों के विषय भोगने को ही सुख समझते हैं। अचरज की बात है कि मनुष्य जो विचार शक्ति और बुद्धि रखते हैं उन्हीं विषयों के भोगने या मान बड़ाई वग़ैरह में फँसे रहते हैं और इन सुखों का यह हाल है कि या तो मिलते ही नहीं या पूरे नहीं मिलते और जो फ़र्ज़ करो पूरे मिल भी गये तो इधर उनके जाते रहने का फ़िकर लगा रहता है और उधर रात दिन भोगने से वह सुख साधारन हो जाते हैं और उनसे विशेष सुख की चाह यानी तृष्णा पैदा होती है और जो कोई बीमारी या दुख या किसी रिश्तेदार के घर मौत हो गई तो सारा सुख दुख रूप मालूम होने लगता है॥

२—बिचार करने से यह भी मालूम होता है कि जितने सुख, आनन्द और स्वाद दुनिया में दिखाई देते हैं इन सब का भंडार हमारी सुरत अथवा रूह यानी जीवात्मा में मौजूद है—जैसे जब हम कोई चीज़ खाते हैं उसका स्वाद जिह्वा इन्द्री के सबब वा कारन से मालूम होता है पर जिह्वा जड़ है और सिर्फ़ सुरत का एक बाहरमुखी औज़ार या द्वारा है जिसके ऊपर बैठ कर सुरत की धार हर एक खाने पीने की चीज़ का स्वाद लेती है, इसी तरह सब करम इन्द्री और ज्ञान इन्द्रियों का हाल समझना चाहिये—जिस इन्द्री (और भी जिस चीज़ या भोग) के स्थान पर सुरत की धार मौजूद होती है वहाँ ही उस इन्द्री के द्वारा उसके भोग अथवा स्वाद का हाल मालूम होता है—जो सुरत की धार न आवे तो किसी तरह से स्वाद मालूम नहीं हो सकता जैसे कि बेहोशी या ग़फ़लत की हालत में जब कि सुरत की सब धारें अन्दर में खिंची हों जो किसी की जिह्वा या किसी और इन्द्री पर कोई चीज़ रक्खो तो उसको कुछ स्वाद नहीं मालूम पड़ेगा॥

३—स्वप्न अवस्था में जब कि कोई बाहर का पदार्थ मौजूद नहीं होता और बाहर की इन्द्रियां भी सोई होती हैं पर सुरत और मन अपनी धारों और अन्तरी इन्द्रियों के द्वारा सब भोग और सुख हासिल करते हैं और जो कोई बीमारी या दूसरी तकलीफ़ हमारे स्थूल

शरीर में हो उसकी तकलीफ़ भी स्वप्न अवस्था में मालूम नहीं होती (स्वप्न सुषोपति अथवा नींद और गहरी नींद इन दोनों अवस्थाओं में संसारी लोगों की तवज्जुह नीचे के स्थानों में जाती है और सुरत शब्द अभ्यासियों की ऊँचे की तरफ़) इसलिये जो किसी जतन से कोई मनुष्य जब और जितनी देर तक चाहे जाग्रत में सुपन की सी अवस्था पैदा कर सके तो जब तक वह अवस्था रहेगी जिस तरह का सुख चाहे भोग सकता है और संसार और देह के सब दुखों और क्लेशों से बच सकता है ॥

४—जो कोई किसी जतन से सुरत के स्थान तक पहुंच जावे तो वे मदद यानी बिना सहायता किसी अन्तरमुखी इन्द्री वग़ैरह के और बे किसी मिहनत और तक्लीफ़ के जब तक उस स्थान में रहे जो सुख चाहे बहुत आसानी और निरमलता के साथ और ऊंचे दरजे का हासिल कर सकता है—और सुरत जिस सूरज (कुल मालिक राधास्वामी) की एक किरन या जिस सिंध की एक बूँद है—जो किसी जतन से उस सूरज या सिंध तक पहुंच जावे—तो जितना अनन्त, अनादि और अपार सुख हासिल अर्थात् प्राप्त होना मुमकिन है उसका अन्दाज़ा सिर्फ़ अनुभव में किया जा सक्ता है ॥

५—ऊपर लिखे हुए जतन हासिल करने को ही सच्चा परमार्थ कहा जा सकता है ॥

६—संतों ने इस जतन का नाम सुरत शब्द का अभ्यास रक्खा है ॥

७—इन्साफ़-पसन्द लोग यानी न्यायकारी पुरुष जो इस पोथी को पढ़ेंगे वे आप जाँच करेंगे कि संतमत अथवा राधास्वामी पंथ की कैसी बड़ी भारी और क़ुदरती जड़ है और आम तौर पर ज़ाहिर होने से कैसे बड़े दरजे का यह मत हो सकता है कि इस में सारी दुनिया के मनुष्य शामिल हो सकते हैं—हर एक हाल के मत और पंथ का आदमी, हर एक दुनिया के हिस्से का रहनेवाला—पुरुष, स्त्री, लड़का, जवान, बूढ़ा इस मत से बराबर लाभ उठा सकता है—और इस तरह पर आम मेल और आपस में मित्र भाव और सच्ची विरक्तता जीव की इस संसार में और सच्ची मोक्ष और उद्धार अन्त में संत मत अथवा राधास्वामी पंथ के उपदेश पर चलने और उसके मुवाफ़िक़ यानी अनुसार अभ्यास करने से प्राप्त हो सक्ती है ॥
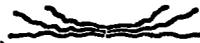
राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय
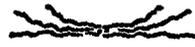
प्रश्न और उत्तर

प्रश्न १—संतमत या राधास्वामी पंथ किस को कहते हैं ॥

उत्तर--संतमत या राधास्वामी पंथ सारे संसार के सब मतों की जान है—सब विद्याओं का सिद्धान्त है जिसको संतों ने अति परीक्षा और अभ्यास करके और जीवों पर अति दया करके प्रगट किया है—यही मत है जिसके वसीले से सच्चे मालिक राधास्वामी की पहिचान और उनके मिलने का रास्ता और स्थानों का भेद मालूम होकर सच्ची ख़ुशी और उद्धार हासिल हो सकता है—यह मत और उसका अभ्यास ख़ास कर उन मनुष्यों के वास्ते है जिनको सच्चे मालिक राधास्वामी के मिलने की चाह और अपने जीव के कल्यान और उद्धार का सोच है, संसारी चाहों और मान बड़ाई चाहने वालों के वास्ते और भी जिन्हों ने परमारथ को अपनी जीवका का वसीला बना रक्खा है या परमारथी बाद विवाद को मन-रंजन या जी ख़ुश करने के लिये एक खेल कर रक्खा

है यह मत न फ़ायदा करेगा और न उनकी समझ में आवेगा—संतों ने इस मत को सुरत शब्द जोग कहा है॥

प्रश्न २—सुरत किस को कहते है॥

उत्तर--जैसे संतमत अथवा राधास्वामी पंथ सब मतों की जान है ऐसेही सुरत सब पिंडों और पदार्थों की जान है—इसी को रूह या जीवात्मा कहते हैं—इसी के बल से सब पिंड, मन, इन्द्रियाँ वग़ैरह अपना अपना काम कर रहे हैं—इसी में सारे संसार की विद्या और कारीगरी भरी हुई हैं—जो जिस तरफ़ सच्चे मन से और मिहनत करके तवज्जुह करता है वह उसी तरफ़ से अनगिनत अद्भुत शक्तियाँ हासिल करके अपनी मनोकामना पूरन करता है—पिंड के अन्दर सुरत का असली स्थान और ठहराव आंखों के पीछे है और उसका भंडार आदि शब्द में है॥

प्रश्न ३—आदि शब्द किस को कहते हैं॥

उत्तर—आदि शब्द सब का करता और मालिक है—इसी को आदि नाद और आवाज़ ग़ैब कहते हैं--वेद के स्थान से जो शब्द प्रगट हुआ है उसको अनहद और शब्द ब्रह्म कहा है—फ़ारसी में हुक्म मालिक का और कुदरत कुल कहा है—ईसाई मत में लिखा है—कि आदि में कलाम अथवा शब्द था—शब्द मालिक के साथ था—और शब्द ही मालिक था—शब्दकी महिमा सब मतों में है—पर उसका भेद किसी मत के ग्रन्थों में नहीं है—संतों ने शब्दों की तफ़सील, उनका भेद

और उनकी महिमा, कहीं इशारे में और कहीं गुप्त करके और कहीं साफ़ साफ़ प्रगट करके अपनी बानी में कही है और उसका ख़ुलासा यह है ॥

१—प्रथम धुर पद कि जो सब से बड़ा और ऊंचा है कि जिसका नाम स्थान भी नहीं कहा जाता है उसको राधास्वामी अनामी और अकह कहते हैं यह आदि और अंत सब का है-और सब रचना इसके घेर में है और हर जगह इसी स्थान की दया और शक्ती अंश रूप से काम दे रही है और आदि में इसी स्थान से मौज उठी और शब्द रूप होकर नीचे उतरी यह स्थान परम संतों का है--सिवाय बिरले संतों के यहाँ और कोई नहीं पहुँचा और जो पहुँचा उसी का नाम परम संत है ॥

२—राधास्वामी पद के नीचे अगम और अलख दो स्थान बीच में छोड़कर सत्तनाम अथवा सत्तलोक महा प्रकाशवान और निहायत पाक और निरमल है और कुल नीचे की रचना का आदि और अंत यही है संत मत में सच्चा मालिक और करता इसी को कहते हैं और सत्य शब्द का प्रकाश इसी स्थान से हुआ और इसको महानाद और सार शब्द भी कहते हैं--यह अजर अमर अविनाशी और सदा एक रस है संत इसी पुरुष का रूप यानी औतार हैं और जिस की क़ुदरत से सोहं पुरुष, पारब्रह्म, ब्रह्म और माया प्रगट हुए ॥

३—तीसरा सोहं पुरुष का शब्द ॥

४—पारब्रह्म का शब्द जिसकी सहायता से तीन लोक की रचना ठहरी हुई है ॥

५—ब्रह्म शब्द जो कि प्रणव है और जिससे सूक्ष्म यानी ब्रह्मांडी वेद और ईश्वरी माया प्रगट हुई ॥

६—माया और ब्रह्म का शब्द जिससे तिरलोकी की रचना का मसाला तैयार हुआ ॥

माया शब्द के नीचे बैराट पुरुष का शब्द और जीव और मन का शब्द प्रगट हुआ ॥

आज कल अव्वल तो अभ्यास ही नहीं है और जो कहीं कहीं है तो नीचे के शब्दों का—अकसर अभ्यासी बैराट शब्द को ही करता शब्द मानते हैं ॥

प्रश्न ४—ऊपर लिखे हुये घट के अंदर के शब्द और बैखरी यानी ज़बानी शब्द में कुछ फ़र्क है या नहीं ॥

उत्तर—हां फ़र्क है-पहिला सूक्ष्म दूसरा स्थूल शब्द है-पहले को धुन्यात्मक और दूसरे को वर्णात्मक कहते हैं—पहली आवाज़ ब्रह्माण्डी यानी आंखों के ऊपर के स्थानों से प्रगट होती है--दूसरी आवाज़ नाभी के स्थान से उठती है—उस जगह उसका नाम परा बानी है फिर हिरदे और कंठ में होकर जहां उसको पश्यंती और मध्यमा कहते हैं जिह्वा पर आती है और बैखरी कहलाती है और उसके सबब

से सारे संसार का इन्तिज़ाम और बंदोबस्त हो रहा है—शब्द ही है कि जिस को चाहे एक छिन में हँसा दे या रुला दे या क्रोध में भर दे मित्र और बैरी बना दे—हाकिम और ताबेदार बना दे—जब कि इस शब्द में जो नीचे और स्थूल स्थानों से पैदा होता है ऐसी बड़ी शक्ति है तो उस शब्द में जो ऊँचे और सूक्ष्म स्थानों से प्रगट होता है ज़रूर ज़ियादा बड़ी ताक़त होनी चाहिये सो वही सूक्ष्म शब्द तीनों लोकों और उन से ऊपर के लोकों की सब कारंवाई कर रहा है॥

प्रश्न ५—शब्द को आकाश का गुन कहते हैं इसका क्या मतलब है॥

उत्तर—इसका मतलब यह है कि शब्द आकाश को जान है। गुन जौहर यानी रूह को कहते हैं और गुनी जिस में वह गुन रहता है—खुलासा यह है कि शब्द चिदाकाश का चेतन करने वाला है॥

प्रश्न ६—सब मतों में मालिक के नाम की बड़ी महिमा कही है और ताकीद की गई है कि उसका नाम हर वक्त जपना चाहिये—क्या उस नाम और शब्द में कुछ मेल है॥

उत्तर—शब्द ही मालिक का असली नाम है और उसके जपने से यह मतलब है कि हर वक्त उसकी धुन का खयाल रखना चाहिये। राम राम या अल्ला अल्ला या और कोई इसी तरह का नाम बिना भेद और जुगत

के जिभ्या से हर वक्त जपते रहना बेफ़ायदा है क्योंकि उस से सुरत का चढ़ना न होगा और न सच्ची मुक्ति प्राप्त होगी—मुफ़स्सिल भेद नाम का सतगुरु वक्त से मालूम हो सक्ता है ॥

प्रश्न ७--सुरत और शब्द में क्या मेल है ॥

उत्तर—जैसा समुद्र और उसकी लहर में सूरज और उसकी किरन में--सुरत जो मुवाफ़िक़ एक बूँद के है सिंध रूपी शब्द से अलग होकर कीचड़ रूपी गिलाफ़ों या बंधनों में लिपट गई है--संत रूपी लहर जो हर वक्त समुद्र से निकल कर उसमें फिर जाती रहती है इस बूँद को अपने साथ लेजाकर गिलाफ़ों या बंधनों से छुटकारा यानी मोक्ष दिला सक्ती है ॥

प्रश्न ८--बन्धन और मोक्ष किस को कहते हैं ॥

उत्तर--सुरत अपने निज स्थान से उतर कर तीन गुन (सतोगुन (१) रजोगुन (२) तमोगुन (३)) पाँच तत्त (पृथवी (१) जल (२) अगिनी (३) पवन (४) आकाश (५)) और चार अंतःकरण (मन (१) बुध (२) चित्त (३) अहंकार (४)) और दस इन्द्रियाँ पाँच ज्ञान इन्द्री (आँख (१) नाक (२) कान (३) ज़बान (४) तुचा (५) अथवा खाल) और पाँच करम इन्द्री (हाथ (१) पाँव (२) मुँह (३) लिंग (४) गुदा (५)) वग़ैरह में फँस गई है और उसका शरीर और शरीर के सम्बन्धी पदार्थों से ऐसा बन्धन पड़ गया है कि उनसे अलग होना बहुत मुशकिल हो गया है—इन्हीं बन्धनों से छूटने को मोक्ष कहते हैं ॥

प्रश्न ९--बन्धन के किस्म के हैं ॥

उत्तर--दो किस्म के बाहरी और अंतरी--बाहरी बन्धन स्त्री पुत्र सम्बन्धी धन धाम जगत लाज कुल मर्यादा, और अंतरी बन्धन देह, इंद्री, मन, तत्त, गुन, और अन्तःकरन के साथ हैं ॥

प्रश्न १०--सुरत का असली स्थान अथवा भंडार कहाँ है ॥

उत्तर—दयाल देश में है--दयाल देश से जैसे जैसे सुरत नीचे उतरी है माया की मिलौनी के सबब से स्थान मुकर्रर हुए हैं--जैसे सूक्ष्म--विशेष सूक्ष्म--अति सूक्ष्म--और स्थूल—विशेष स्थूल—अति स्थूल। इस संसार में सुरत अति स्थूल खोलों में गुप्त हो गई है और यह संसार दयाल देश से तीसरे दरजे पर गिना जाता है ॥

प्रश्न ११—रचना के तीनों दरजों का हाल बतलाइये॥

उत्तर—प्रथम दयाल देश जहाँ निरमल चेतन अथवा नूर ही नूर है—दूसरा ब्रह्म और माया देश जहाँ ब्रह्मांडी मन और निरमल माया के साथ सुरत की मिलौनी हुई है—तीसरा जीव देश जहाँ पिंडी मन और स्थूल माया के साथ सुरत की मिलौनी हुई है ॥

प्रश्न १२—माया किस को कहते हैं ॥

उत्तर--माया उस गुबार का नाम है जो दयाल देश के नीचे चेतन पर गिलाफ़ हो रहा है और नीचे की तरफ़ वह गुबार या गिलाफ़ ज़ियादा स्थूल होता चला गया है ॥

प्रश्न १३—जिस तरह सुरत नीचे उतरी उसके उतार के स्थान तफ़सील के साथ बयान कीजिये ॥

उत्तर—सुरत का असली स्थान राधास्वामी अनामी पद में है—यहाँ कोई बिरले ही पहुँचते हैं और उन्हीं को परम संत कहते हैं—उस जगह से एक मौज उठी और शब्द रूपी धार होकर नीचे उतरी और दो स्थान (अगम अलख) में होकर सत्तलोक में आई यह स्थान महा प्रकाशवान और निर्मल और चेतन्य है—इस स्थान यानी सत्तलोक के पहुँचे हुए को संत और सत पुरुष कहते हैं—इन चारों पद को दयाल देश कहते हैं और मुसलमान सत्तलोक को हूत कहते हैं—सत्तलोक से दो स्थान भँवरगुफा और महासुन्न छोड़ कर सुन्न यानी दसवाँ द्वार है—यहाँ से सुरत ब्रह्मांड और पिंड में फैली—संतों का आत्म पद और फ़कीरों का मुक़ाम हाहूत यही है इस जगह तक सुरत पाँच तत्त और तीन गुन और कारन सूक्ष्म और स्थूल शरीर से न्यारी है—पुरुष और प्रकृति इस जगह से प्रगट हुए—इसको पारब्रह्म पद भी कहते हैं और इस स्थान पर पहुँचे हुए को पूरा साध कहते हैं—सुन्न से नीचे त्रिकुटी है—जिस को गगन भी कहते हैं—इसी को ब्रह्म प्रणव और ओं कहते हैं और मुसलमानों ने इसको अर्श अज़ीम और आलम लाहूत कहा है—यहाँ से महा सूक्ष्म तीन गुन पाँच तत्त और वेदादिक आसमानी किताब की आवाज़ और कुल

रचना का सूक्ष्म मसाला और निरमल माया प्रगट हुए--इस स्थान को महा आकाश भी कहते हैं और स्थान के मालिक को ब्रह्म और संत ब्रह्मांडी मन और मुसलमान खुदाय अजीम कहते हैं--इसके नीचे सहसदलकँवल है--उसको जोत-निरंजन शिव-शक्ती वगैरह भी कहते हैं और संतमत अथवा राधास्वामी पंथ में यहाँ से ही साधना पहिले कराई जाती है--इसी को संत निज मन कहते हैं--इसी स्थान से सूक्ष्म तत्त (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) और उसके पीछे स्थूल तत्त (आकाश, पवन, अगिनी, जल, पृथवी) और सूक्ष्म इन्द्रियाँ, प्राण, प्रकृतियाँ प्रगट हुईं इसी स्थान का प्रतिबिम्ब या छाया पहिले तीसरे तिल में जो आँखों के पीछे मध्य में है और फिर दोनों आँखों में उसकी धार आकर ठहरी हुई है और इसी स्थान यानी सहसदलकँवल से चिदाकाश यानी चेतन्य आकाश जिसको बाज़े ज्ञानी ब्रह्म कहते हैं सारे पिंड अथवा देह में और कुल रचना में जो इस स्थान से नीचे है फैला हुआ है और इसी को व्यापक चेतन्य कहते हैं--यहाँ तक तफ़सील दरजों उलवी यानी आसमानी की खतम हुई--इसके नीचे छः स्थान (षट चक्कर) पिंड में इनकी छाया हैं और उनको सिफ़ली अथवा नीचे के स्थान कहते हैं--पहिला चक्कर दोनों आँखों के पीछे जहाँ सुरत का ठहराव है--दूसरा चक्कर कंठ यानी गले में है--इस जगह सुपने की रचना जीवआत्मा लिंग शरीर

की मदद से रचता है--देह के प्राण का स्थान यही है--तीसरा चक्कर हिरदे में हैं और पिंडी मन का यही स्थान है--सङ्कल्प विकल्प इसी जगह से उठते हैं। खुशी रंज आसा निरासता डर निडरता सुख और दुख वग़ैरह का असर इसी स्थान पर होता है चौथा चक्कर नाभ कँवल है और स्थूल पवन का यही भंडार है--पाँचवाँ इन्द्री चक्कर इसी स्थान से पैदावारी स्थूल शरीर की है--छठा गुदा चक्कर है यह चक्कर नाभी की तरफ़ से प्राणों को खींच कर नीचे के शरीर यानी टाँगों पाओं वग़ैरह को ताक़त देता है॥

यह सब स्थान ऊँचे और नीचे अन्तर में हैं--सिफ़ली दरजे आंखों के नीचे तक खतम होते हैं--इस वास्ते पिंड की हद्द आँखों तक है और इसी सबब से इस को नौ द्वार का पसारा भी कहते हैं--आँखों के ऊपर सहसदलकँवल के मैदान से ब्रह्मांड शुरू होता है और दसवें द्वार तक खतम होता है और वही पारब्रह्म कहलाता है और महा सुन्न के मैदान के परे दयाल देश है॥

प्रश्न १४--बारह कँवल क्या हैं उन का नाम और स्थान तफ़सील के साथ बतलाइये॥

उत्तर--ऊपर ज़िक्र किये हुए उलवी और सिफ़ली स्थानों को ही बारह कँवल भी कहते हैं और उनकी गिनती नीचे से होती है उनके नाम स्थान की मुवाफ़िक़ संत मत के यह तफ़सील है--

१—गुदा चक्र—चार दल का कँवल—गनेश का बासा। जो कि अगले ज़माने में जोग अभ्यास इसी जगह से शुरू कराया जाता था इस सबब से जोगियों की देखा देखी गृहस्थी लोग हर एक काम के शुरू में गनेशजी की पूजा करते हैं॥

२—इन्द्री कँवल—छः दल का—ब्रह्मा यानी पैदा करने वाली शक्ती का बासा॥

३—नाभी कँवल—आठ दल का—बिस्नु यानी पालन करने वाली शक्ती का बासा॥

इन तीन स्थानों यानी गुदा, इन्द्री और नाभी कँवल को मुसलमान नासूत कहते हैं॥

४—हिरदे कँवल—बारह दल का—शिव शक्ती का बासा॥

५—कंठ चक्र—सोलह दल का—दुरगा यानी इच्छा शक्ति और आत्मा का बासा॥

६—तीसरा तिल या नेत्र जिसको शिव नेत्र, श्याम सेत वग़ैरह नाम भी कहते हैं दो दल का सुरत यानी परम आत्मा का बासा—शुरू में इस जगह सुरत को समेटना चाहिये—इस स्थान के साथ अंतः करण की डोर लगी हुई है और अंतःकरण के साथ दसों इन्द्रियों वग़ैरह की—इन तीनों स्थानों यानी हिरदे कँवल, कंठचक्र और तीसरे तिल को मुसलमान मलकूत कहते हैं—यहाँ पर सिफ़ली स्थानों की हद्द है॥

७—सहसदलकँवल, सेत श्याम, आठ दल का, जोत निरँजन का बासा—यहाँ से दो आवाज़ आसमानी निकलती हैं—यानी शब्द प्रगट होता है—उसको पकड़ कर सुरत ऊपर को चढ़ती है ॥

८—त्रिकुटी—चार दल का कँवल—ओम् का बासा—यह त्रिकुटी संतों की है—जोगेश्वरों की नहीं है—इस को हंस मुखी कहते हैं—इन दोनों कँवलों यानी सहसदल और त्रिकुटी को मुसलमान जबरूत और लाहूत कहते हैं ॥

९—सुन्न या दसवाँ द्वार—एक दल का कँवल—पारब्रह्म का बासा—मुसलमान फ़क़ीर इसको हाहूत कहते हैं—यहाँ उलवी स्थान ख़तम हुए ॥

१०—महासुन्न मैदान—यहाँ चार शब्द और पाँच स्थान गुप्त हैं ॥

११—भँवर गुफा—मुसलमान इसको हूतलहूत कहते हैं—सोहं पुरुष का बासा यह सोहं स्वाँसा का सोहं नहीं है—यह दो स्थान यानी महा सुन्न और भँवर गुफा दयाल देश की हद्द में हैं ॥

१२—सत्तलोक—मुसलमान इसको हूत कहते हैं सत्त पुरुष का बासा—इसके ऊपर तीन पद और हैं—पिछले संतों ने उनको प्रगट करके बयान नहीं किया—अब मौज से इस ज़माने में राधास्वामी दयाल ने उनको साफ़ साफ़ प्रगट करके बयान किया है ॥

प्रश्न १५—दल किस को कहते हैं ॥

उत्तर—वृत्तियाँ और धारों को, यानी पिंडी स्थानों के दलों को वृत्तियाँ कहते हैं, और ब्रह्मांडी स्थानों के दलों को धारें ॥

प्रश्न १६—जब कि यह सब स्थान अंतर में हैं तो उनका सम्बन्ध यानी रिश्ता स्थूल शरीर से किस तरह का है ॥

उत्तर—शरीर तीन तरह का है—स्थूल, सूक्ष्म, कारन—स्थूल जो दिखलाई देता है, यह सुरत या आत्मा का एक प्रत्यक्ष खोल और औज़ार है—और इसका सम्बन्ध सिर्फ़ जाग्रत अवस्था में है और इसके सब दुख सुख वगैरह सिर्फ़ जाग्रत में मालूम होते है—इसी तरह सूक्ष्म शरीर का सम्बंध सिर्फ़ सुपन अवस्था से और कारन का सुषोपति से है—यानी यह तीन ग़िलाफ़ सुरत के ऊपर चढ़े हुए हैं या यों समझना चाहिये कि सुरत एक चेतन्य शक्ती अनगिनत धारों वाली है—वह धारें पहिले निरमल नूर थीं दरजे बदरजे मिलौनी हुई और जैसे जैसे मिलौनी होती गई वैसे वैसे आकार बनना शुरू हुआ और वह धारें दरजे बदरजे स्थूल होती चली गईं ॥

प्रश्न१७—इस बात को दृष्टान्त से समझाइये ॥

उत्तर—सुरत यानी रूह की बराबर सूक्ष्म या उसकी सी ताक़त और बड़ाई वाली कोई चीज़ नहीं है फिर भी सिर्फ़ समझ में आने के वास्ते पानी का दृष्टान्त दिया जाता

है। दृष्टान्त का सिर्फ़ एक अंग लेना चाहिये। पानी पहिले अति सूक्ष्म बल्कि अरूप था फिर गैस रूप हुआ फिर बादल और भाप बना और फिर मेंह के सबब पृथ्वी पर आकर स्थूल रूप हो गया, बाज़ी जगह कीचड़ में मिल कर अति स्थूल रूप हो गया और बाज़ी जगह सरदी के सबब बर्फ़ बन कर बिल्कुल बेहरकत और बेजान हो गया और आम यह बात है कि बर्फ़ से बादल तक जुदा जुदा सूरतें बदल कर और जुदा जुदा ताक़तें हासिल करके कभी रूपवाला और कभी अरूप हो जाता है पर जब गैस या उससे ज़ियादा बारीक हो जाता है तो अति करके बलवान होकर ऊँचे देश में जा समाता है। इसी तरह सुरत का कोई रूप नहीं है पर मिलौनी होते होते और खोल चढ़ते २ उन खोलों का रूप दिखाई देता है और जितनी ज़ियादा मिलौनी होती जाती है रूह की ताक़त उन मिलौनियों में छिपती और समाती जाती है और जब सुरत इन मिलौनियों के खोलों से प्रीत छोड़ कर शब्द में प्रेम पूर्वक जुड़ेगी तो उसमें मानिंद उस अग्नी के कि जिसके ऊपर से राख हटा दी जाती है ऐसी ताक़त पैदा होगी जिसके सबब जड़ चेतन्य की गाँठ खोल कर और ब्रह्मांड को फोड़ कर सत्तलोक और राधास्वामी अनामी पद में जा पहुँचेगी और उस वक्त आवागवन से सच्चा छुटकारा होगा॥

प्रश्न १८—जड़ चेतन्य की गांठ किस को कहते हैं॥

उत्तर—मन इन्द्रियाँ देह और सब संसारी पदार्थ और भोग वग़ैरह जड़ हैं। सुरत यानी रूह चेतन्य है। त्रिकुटी के स्थान में इनकी मिलौनी शुरू हुई है उसी स्थान तक माया का असर है। और उसी जगह जड़ चेतन्य की गाँठ शुरू में बँधी है। उस जगह सुरत को जिन स्थानों में होकर वह नीचे उतरी है उन्हीं स्थानों में दरजे बदरजे अभ्यास की मदद से ऊपर की तरफ़ खींच कर ले जाने से त्रिकुटी में जड़ चेतन्य की गाँठ खुल जावेगी यानी माया के अंग उसी जगह या उसके नीचे रह जावेंगे वहाँ से आगे नहीं जा सक्ते हैं॥

प्रश्न १६—सारे ब्रह्मांड का हमारे शरीर से सम्बन्ध और उस में मौजूद होना किस तरह मुमकिन है॥

उत्तर—जो कि ब्रह्मांड के स्थान निहायत बड़े हैं और बहुत ही दूरी पर हैं फिर भी (मिस्ल बिजली के तार के) उनकी डोरी हमारे अंतर में लगी हुई है। जब सुरत शब्द जोग की करनी से रूह सारी देह से सिमट कर ऊपर के स्थानों में चढ़ जावेगी तो जब और जितनी देर तक चढ़ी रहेगी उन असली स्थानों की सैर करती रहेगी क्योंकि हमारे अंतर में जो स्थान हैं उनकी डोरी बाहर के स्थानों से लगी हुई है और जो धारें आती जाती हैं वह मुवाफ़िक़ दूरबीन के है जिसके सबब हम उन दूर दराज़ स्थानों को देख सकते हैं जैसे आँख के स्थान से कुल बाहर की रचना के साथ मिस्ल सूरज और चाँद और

सितारों वग़ैरह के जो बहुत बड़े बड़े हैं किरनों की डोरियाँ लगी हुई हैं जिनके सबब हम उन स्थानों को देखते हैं॥

प्रश्न २०—मालिक को सर्वव्यापक कहते हैं उसके रहने का ख़ास स्थान किस तरह हो सक्ता है॥

उत्तर—मालिक सर्वव्यापक भी है और ख़ास स्थान में भी है यानी उसके विशेष और सामान रूप का भेद है जैसे सूरज एक देशी है और अपने मंडल में सर्व देशी भी है यानी उसकी रोशनी उस मंडल में सब जगह मौजूद है॥

प्रश्न २१—सुरत यानी रूह को अभ्यास करके ऊपर चढ़ाने से क्या फ़ायदा होता है॥

उत्तर—प्रथम तो सुरत में उन स्थानों के से अच्छे असर पैदा हो जाते हैं दूसरे जिस वक़्त सुरत शरीर को छोड़ेगी फ़ौरन उन स्थानों में पहुंचेगी और मुवाफ़िक़ उस स्थान के जहाँ वह पहुँचे बहुत मुद्दत तक और बहुत ठहराऊ आनन्द हासिल करेगी और कामादिक बिकारों के बस में न आवेगी और जब सत्तलोक में पहुँच जावेगी तब माया के घेर से निकल जावेगी और आवागवन बिल्कुल छूट जावेगा और अमर अजर हो जावेगी और ख़ुशी और आनन्द हमेशा का प्राप्त हो जावेगा और देहियों के सम्बन्धी दुख सुख से बिल्कुल बचाव हो जावेगा॥

प्रश्न २२—क्या सबूत है कि ऊपर के स्थान बहुत शुद्ध ठहराऊ और सुखदायक हैं ॥

उत्तर—जितनी जहाँ चेतन्य शक्ती ज़ियादा है वहाँ उतनाही विशेष आनन्द और अच्छे सामान और ज़ियादा अरसे तक ठहराऊ होते हैं और जहाँ माया बिल्कुल नहीं है वह स्थान भी हमेशा क़ायम रहता है और वहाँ का आनंद भी ज़ियादा से ज़ियादा है ॥

प्रश्न २३—अभ्यास करने से कामादिक बिकार किस तरह बस में आ जावेंगे ॥

उत्तर—असल जड़ इन बिकारों की ब्रह्मांड में है पर महा सूक्ष्म तौर से, और पिंड में इनका ज़हूर सूक्ष्म और स्थूल तौर से, होता है। अभ्यास करने से जैसे सुरत ऊँचे स्थानों में पहुँचती जाती है ऐसे ही ताक़त इन बिकारों की घटती जाती है और जब सुरत अभ्यास करके पिंड और ब्रह्मांड के पार पहुंचेगी तब इन बिकारों के असर से बिल्कुल अलहदा हो जावेगी ॥

प्रश्न २४—जो अभ्यासी कामादिक बिकारों को बस में कर लेते हैं उनकी क्या पहिचान है ॥

उत्तर—जब किसी की सुरत पिंड से ब्रह्मांड में और फिर उसके ऊपर दयाल देश में अभ्यास करके पहुँचने लगी तो कुल बिकार उसके दूर हो जाते हैं और उसको ताक़त हो जाती है कि चाहे जिस अङ्ग में जिस वक्त ज़रूर और मुनासिब समझे बरताव करे चाहे न करे

मगर ऐसे शख़्स की पहिचान सिवाय अभ्यासी के दूसरा नहीं कर सक्ता है अलबत्ता कोई दिन संग करने से कुछ थोड़ा हाल मालूम हो सक्ता है ॥

प्रश्न २५—अभ्यास न करने वालों की सुरत कहाँ जाती है॥

उत्तर—जो अभ्यासी नहीं हैं उनकी सुरत आवागवन में रह कर चौरासी भोगती है—यानी उनकी रूह पिंड से निकलते ही पहिले आकाश में पहुँचते पहुँचते संसार और देह की सुध भूल जाती है और फिर मुवाफ़िक़ अपनी ज़बरदस्त भावना या दृढ़ आसा के कर्म अनुसार दूसरे शरीर में भेजी जाती है ॥

प्रश्न २६—आवागवन किस को कहते हैं ॥

उत्तर—इस संसार में अनगिनत क़िस्म और हर एक क़िस्म में अनगिनत जोन हैं जिसमें कुल मनुष्य जानवर चरिंद परिन्द कीड़े मकोड़े दरख़्त झाड़ पहाड़ पत्थर आदिक शामिल हैं। हर एक जीव को मुवाफ़िक़ अपने करमों के चौरासी भोगनी पड़ती है और सिर्फ़ मनुष्य देह उत्तम है जिसमें यह अच्छे कर्म और अभ्यास आदिक जतन करके चौरासी के घेरे से निकल सक्ता है ॥

प्रश्न २७—करम किसको कहते हैं ॥

उत्तर—किसी काम के करने को करम कहते हैं निःकाम करम को अथवा वह काम जो सिर्फ़ मालिक से मिलने

के निमित्त किया जावे संतों ने परमार्थ के वास्ते बहुत अच्छा माना है और निषेद करम का बिल्कुल त्याग और सकाम का जो दुनिया के मतलब के लिये करे परमार्थ के वास्ते जहाँ तक हो सके त्याग कहा है। मतलब यह है कि जिस करम या बचन से कि जो बगैर अपने ख़ास मतलब के किया जावे और उससे जानदारों को आराम पहुंचे और उनका फ़ायदा होवे वह शुभ करम है और जिस कर्म (या बचन) से जो अपने ख़ास मतलब या किसी अपने प्यारे के मतलब के वास्ते किया जावे और जिससे दूसरों को किसी तरह से नुकसन या तकलीफ़ पहुँचती हो वह पाप में दाख़िल है, ग़रज़ यह है कि जिस बात को कोई आदमी अपने ऊपर पसंद न करे उसे दूसरे के ऊपर भी पसंद न करे या जिस तरह वह चाहता है कि और उससे बरतावा करें वैसा ही वह औरों से बरतावा करे। दूसरी तरह करम की यह तारीफ़ है कि जिस करम से दिन दिन मालिक के चरनों की नज़दीकी प्राप्त होवे याने सतगुरु सेवा और सतसंग वह सब से अच्छा और जिस से दूरी हो याने दुनिया की मुहब्बत और चाह वह निहायत बुरा करम है, और भी जिस करम को करते वक्त या उसके फल भोगने के वक्त किसी जीव को सुख मिले वह अच्छा और जो दुख मिले वह बुरा करम है॥

प्रश्न २८—जीव रक्षा ख़ास कर गऊ रक्षा जिसका आज कल बहुत चरचा हो रहा है संत मत में कैसा

करम समझा गया है ॥

उत्तर—संत मत दया का मत है और जैसा कि यह निहायत बड़े दरजे का मत है ऐसे ही निहायत ही बड़े दरजे की दया का इसमें ज़िकर है। जीव रक्षा आदि शुभ करम समझे गये हैं पर छोटे दरजे के और उनके करने के वास्ते सेठ साहुकार राजा आदिक ज़ियादा ठीक हैं। संत मत केवल परमार्थ अथवा फ़क़ीरी का मार्ग है। इसमें निहायत ही बड़े दरजे की दया का बरतावा है यानी अपना और दूसरे अधिकारी जीवों का सुरत शब्द की कमाई से उद्धार करना और मालिक के दरबार में पहुँचाना और इस बड़े दरजे की दया में जीव रक्षा आदिक छोटे दरजे की दया आप से आप आजाती है और किसी ख़ास जानदार की ख़सूसियत नहीं है पर जैसे कि दरजे जीवों के रचना में हैं उस मुवाफ़िक़ उनकी रक्षा मुनासिब है ॥

प्रश्न २९—ईश्वरी करम और जीवी करम क्या हैं ॥

उत्तर—जैसे हमारी सुरत की धारें अनगिनत चारों तरफ़ फैली हुई हैं इसी तरह क़ुदरती धारें भी फैली हुई हैं और दोनों अपना अपना काम पिंड और ब्रह्मांड में कर रही हैं और उनका परस्पर एक दूसरे पर असर हो रहा है और वह असर हमारी ज़िन्दगानी

और मौत से (यानी पैदा होने से मरने तक) बहुत बड़ा मेल रखता है इन्हीं धारों को संत मत में दो प्रकार के करम जीवी और ईश्वरी कहते हैं ॥

प्रश्न ३०—संचित करमों को संत किस तरह कटवा देते हैं ॥

उत्तर—तीन तरह के करम हैं जिनके सबब जीव शरीर धारन करके सुख दुख भोगता है वह यह हैं—क्रियमान, प्रारब्ध, संचित। क्रियमान वह करम हैं जो इस शरीर में किये जाते हैं और उनके बहुत से हिस्से का फल भी उसी वक्त भोगा जाता है। प्रारब्ध वह करम हैं जिनके सबब से शरीर मिलता है और अच्छे और बुरे स्थान में जनम लेता है। संचित वह करम हैं जो हर एक जनम में अलग जमा होते रहते हैं और फिर प्रारब्ध करमों में मिल जाते हैं। जब कोई जीव संतों की सरन लेता है तो प्रेमा भक्ती के प्रभाव से क्रियमान करम खासकर उनकी शाखा बुरे करम तो आगे के वास्ते आप ही नहीं होते और अच्छे करम भी जो वह जीव करता है तो वह उनसे फल की इच्छा नहीं रखता बल्कि अपने तईं उनका करता भी नहीं समझता है या उनके करने का अभिमान नहीं करता है और प्रारब्ध करम तो इसी शरीर में भोग लेता है और संचित करम ध्यान और अभ्यास की हालत में भोग लिये जाते हैं। यानी संचित करमों का एक चक्कर है जो मिस्ल कुए की रहट के घूमता रहता है जब

जिस करम के भोगने का समय आता है उस करम के भोगने की चाह पैदा होती है और जो वह चाह ज़बर है तो वह ज़रूर ही भोगा जाता है पर सुरत शब्द जोग अभ्यासी अपने अभ्यास की हालत में समय से पहिले ही उन करमों को रास्ते में ध्यान के वक्त भोग लेता है और जो कि ध्यान की हालत में स्थूल शरीर में बरतावा नहीं होता है इस लिये वह करम सूक्ष्म शरीर में ही भोगे जाते हैं। दूसरा यह भी सिद्धांत है कि सब करम बासना अनुसार भोगे जाते हैं और जब अभ्यासी ने नित सतसंग अंतर और बाहर करके जगत की बासना आहिस्ते आहिस्ते त्याग दी और भक्ती और प्रेम के प्रताप से माया के जाल से निकल कर त्रिकुटी में पहुँचता है और वहाँ के महा आनंद को प्राप्त होता है तो वह माया की हद्द से निकल गया और उसकी बासना इस तरफ की बिल्कुल टूट जाती है और संचित करमों का चक्कर घूमने से रह जाता है बल्कि नष्ट हो जाता है। असल में मतलब दोनों सिद्धान्तों का एक ही है॥

प्रश्न ३१—भक्ती और उपाशना किस को कहते हैं॥

उत्तर—मालिक के चरनों में प्रेम प्रीत और प्रतीत का होना भक्ती और उपासना है और यह उसी वक्त सच्चे मन से हो सकता है जब संत सतगुरु और मालिक का अंतर में दर्शन हो और जोकि सुरत शब्द अभ्यासी को कभी कभी ध्यान और भजन और सुपन अवस्था में

संत सतगुरु और शब्द स्वरूप मालिक का दर्शन अंतर मैं होने लगता है इस वास्ते उसी वक्त से सच्ची भक्ती और उपाशना शुरू हो जाती है और दिन दिन प्रेम बढ़ता जाता है। त्रिकुटी मैं पहुँचने पर यह प्रेम और भक्ती निरमल हो जाती है करमौं का मैल नहीं रहता और उसके पार चलने से सच्ची और निरमल भक्ती शुरू होती है और अगम लोक मैं पहुँचने पर भक्ती पूरन होती है और उसके आगे राधास्वामी अनामी पद मैं सच्चा और पूरन ज्ञान प्राप्त होता है॥

प्रश्न २२—ज्ञान किस को कहते हैं॥

उत्तर—सत्तलोक अलख लोक और अगम लोक के परे पहुँच कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन करना और महा आनंद को प्राप्त होकर रोन शब्द और प्रेम स्वरूप हो जाना इसको ज्ञान कहते हैं। इस जगह पहुँच कर अभ्यासी कुल माया और कुदरत की हद्द से परे हो जाता है इसी का नाम अभेद भक्ती और सच्ची मोक्ष है। संत मत मैं पिछले जुगौं के करम और देवताओं या मूरतौं की उपाशना और कोरा बिद्या-ज्ञान नहीं माना गया है क्योंकि इससे कुछ हासिल नहीं हो सक्ता है वृथा वक्त खोना और बेफ़ायदे तन मन धन का खर्च करना है, और एक आदमी की ताक़त भी नहीं है कि पिछले जुगौं के करम और उपाशना के क़ायदौं के मुआफ़िक़ इस समय मैं बरताव कर सके। इस सबब से वह करम किसी से

विधिपूर्वक बनते भी नहीं, पर अहंकार पैदा हो जाता है। इस समय के जीवों की हालत कमज़ोर देखकर संतों ने और ख़ास कर राधास्वामी दयाल ने ऐसी जुगत करम और उपाशना की बतलाई है कि जो हर कोई अमीर और ग़रीब हर वक्त और हर जगह बग़ैर दूसरे की मदद के आसानी के साथ कर सक्ता है और उसका भारी फ़ायदा थोड़े दिनों में उठा सक्ता है और वह जुगत यह है—

१—सतगुरु वक्त की सेवा तन मन धन से जिस क़दर बन सके और उनका सतसंग बाहरी चित देकर और सुमिरन नाम का अंतरी और सच्चे मोहताज और ग़रीब की बग़ैर लिहाज़ नामवरी या पर्व के दिन के या मुकर्रर किये हुए त्योहार वग़ैरह के अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ मदद करना और संतों की बानी जिसमें सिवाय मालिक की तारीफ़ और प्रेम और भक्ती और ज़िकर अभ्यास अन्तरी सुरत शब्द जोग के और कुछ बयान नहीं किया है और क़िस्से और कहानी वग़ैरह जिसमें नहीं हैं तवज्जह और ग़ौर के साथ हर रोज़ पाठ करना यह करम है॥

२—और जो जुगत कि अंतरी ध्यान की सतगुरु बतलावैं उसको चित लगा कर करना और अंतर में सुरत लगा कर शब्द को सुनना और बाहर सतसंग में जाकर चित

से गौर के साथ सतगुरु वक्त या सच्चे प्रेमी सतसंगी के बचन सुन कर और उनमें से अपने लायक बातें छाँट कर उन पर सच्चे शौक और प्रेम से जितना बन सके चलना और सच्चे मालिक राधास्वामी के चरनों में दिन दिन प्रीत और प्रतीत यानी इश्क़ और यक़ीन और प्रेम का बढ़ाना यह उपासना है॥

३—और जब यह दोनों बातें ठीक ठीक बन आवें तब सच्चे मालिक राधास्वामी के स्वरूप का अंतर में प्रकाश दिखलाई देना और उनका दर्शन करना इस तौर पर आहिस्ते आहिस्ते अभ्यासी खुद शब्द स्वरूप हो जावेगा। इसी का नाम ज्ञान है॥

प्रश्न ३३—सुरत पिंड में किस तरह आती है और किस तरह निकलती है॥

उत्तर—मालिक की कुदरत से वक्त पैदा होने के सुरत ज़बर बासना और कर्म के अनुसार देह में प्रवेश होती है और उसकी छाया नीचे के चक्रों में आहिस्ते आहिस्ते पड़ जाती है और प्राण वगैरह फ़ौरन् अपना काम शुरू कर देते हैं और जब शरीर छूटने लगता है यानी मौत का समय पास होता है तो सुरत का भास और तवज्जह निहायत बेकली और बेहोशी के साथ, गुदा चक्कर से खिंचने शुरू होते हैं और आहिस्ते आहिस्ते आँखों तक पहुँचते हैं और वहाँ से सुरत तीसरे तिल में होकर निकल

जाती है और न्यायकारी मालिक के सामने जाकर फिर करम बासना और समय अनुसार दूसरा जन्म लेती है। सुरत के आने और जाने का हाल हर एक जीव के पैदा होने और मौत के वक़्त देखा जा सक्ता है ॥

पर सुरत शब्द जोग अभ्यासी की सुरत के निकलने का दूसरा रास्ता है यानी वह हर रोज़ सुरत को सिमटाते सिमटाते और ऊपर को चढ़ाते चढ़ाते ऐसा अभ्यास कर लेते हैं कि बग़ैर बेकल और बेहोश होने के सुरत के भास और तवज्जह और आप सुरत को तीसरे तिल मैं और वहाँ से ऊँचे स्थान मैं जहाँ तक उसके अभ्यास की पहुँच है पहुँचाता है। बल्कि मौत से पहिले भी तकलीफ़ वग़ैरह के वक़्त या जब चाहे अपनी सुरत को ऊँचे स्थान पर पहुँचा कर तकलीफ़ से बच जाता है और ब्रह्मांड और दयाल देश यानी राधास्वामी दयाल के चरनौं से अमीरस की धारा पीकर महा आनन्द को प्राप्त होता है ॥

प्रश्न ३४—संत मत कब से जारी हुआ ॥

उत्तर—संत मत हमेशा से है। शुरू मैं इस मत का प्रगट उपदेश देने से पहिले प्राणायाम आदिक संजम और षट चक्कर बिंधवाये जाते थे जिसमैं क़रीब क़रीब सारी उमर बरबाद होती थी और फिर भी पूरा काम नहीं होता था और जो ज़रा परहेज़ मैं फ़र्क़ पड़ता था तो बहुत से ख़तरे और बिघन हो जाते थे इसके बाद

कलजुग में कबीर साहब आदिक संतों ने प्राणायाम का करना षट चक्रों का बिधवाना छुड़ा दिया और आँखों के रास्ते सहसदलकँवल से अभ्यास कराना शुरू किया और इस रास्ते का ज़िकर अपनी बानी में कहीं इशारे में और कहीं गुप्त करके बयान किया और अब इस ज़माने में राधास्वामी दयाल ने जीवों पर अति दया करके इस रास्ते के भेद को बहुत प्रगट करके बयान किया है॥

प्रश्न ३५—ज़ियादा मशहूर अचारज संत और साध कौन कौन हुए हैं॥

उत्तर—कबीर साहब, गुरू नानक साहब, पलटू साहब, जगजीवन साहब, दादू साहब, तुलसी साहब और अब इस ज़माने में राधास्वामी दयाल परम संत औतार हुए हैं॥

प्रश्न ३६—संतों को सत्य पुरुष का औतार किस तरह कहते हैं यानी मालिक किस तरह पर अपनी कुल ताक़त और कुल अक़ल और कुल इल्म इस देह में ज़ाहिर कर सक्ता है॥

उत्तर—मालिक अक़ल-कुल विद्या यानी इल्म-कुल और कुल नेधियों और उमदा सिफ़तों का भंडार और ख़ज़ाना है और यह सिफ़तें जीव में भी (उसकी निस्बत बहुत ही कम) मौजूद हैं और इसी सबब से संत मत में कहा है कि मालिक मिस्ल सिंध और जीव मिस्ल बुँद के है।

सब जीव मिस्ल उस बूँद या लहर के हैं जो समुद्र से निकल कर कीचड़ और मिट्टी में मिल गई है या उनसे घिर गई है, पर संतों की सुरत मिस्ल उस लहर के है जो समुद्र से जुवार भाटे के वक्त दरिया में गुज़र कर कोसों दूर जाती रहती है और फिर समुद्र में आती रहती है। इस लिये हर एक ऐसी लहर को समुद्र ही कहा जा सक्ता है और हर एक यह लहर जहाँ तक उसका गुज़र होता है वहाँ तक की कीचड़ व मिट्टी में मिली हुई या गिरी हुई लहरों को भी समुद्र में ले आती है यानी संतों की सुरत की डोरी मालिक के चरनों तक लगी हुई है जब देह में उनकी सुरत उतरती है तब वह जीव दशा में बरतते हैं और जब ऊपर चढ़ कर सत्यलोक में पहुँचती है तो उनमें और मालिक में भेद नहीं है॥

प्रश्न ३७—पिछले संतों की सिद्धी शक्ती के हाल जो उनके मत की किताबों में लिखे हैं वह सही हैं या गलत॥

उत्तर—जो हाल उनकी सिद्धी शक्ती के लिखे हैं वह असल में उनकी अंदर की चढ़ाई का हाल है, अभ्यास के समय जो स्थान उनको दिखलाई दिये या जो जो बातें पेश आईं या जिन जिन रूहों से मिलना हुआ उनकी कैफ़ियत और हाल बयान किया है वह सब सही है। पर जो लोग इन बातों का होना बाहर समझते हैं गलत है॥

प्रश्न ३८—हक़ीक़त में संत बाहर सिद्धी दिखा सक्ते हैं या नहीं॥

उत्तर—अगरचे संत हर तरह से शक्तिमान और समरत्थ हैं फिर भी वह हमेशा या जहाँ तक हो सक्ता है गुप्त रहना और मालिक की मौज में चलना मुनासिब समझते हैं और जब कोई ख़ास मसलहत या ज़रूरत होती है तब वह कोई ग़ैर मामूली काम या अपनी ताक़त का प्रकाश बाहर करते हैं फिर भी जैसे अगिनी के पास जाने से ज़रूर गरमी मालूम होती है गंधी की दूकान के पास जाने से ज़रूर सुगंध आती है इसी तरह संतों के सन्मुख होने से उनके भजन और उनके अंतर में निहायत ऊँचे स्थान की बैठक के प्रताप से हर एक परमार्थ का खोजी मुवाफ़िक़ अपने अधिकार के कुछ न कुछ आनंद और शान्ती को प्राप्त होता है और जो सच्चे परमार्थी हैं उनपर ख़ास दया वास्ते तरक्की अंतर के आनंद और सुरत और मन की चढ़ाई के हमेशा होती रहती है जो इस तरह की बातों को सिद्धी शक्ती कहा जावे तो संतों के यहाँ ऐसी बातें रात दिन होती रहती हैं यही सच्ची सिद्धी शक्ती है और उनके सच्चे सतसंगी सच्चे मालिक की दया और कुदरत की कार्रवाई को अपने कारोबार में हमेशा अंतर और बाहर देखते हैं इसमें सब सिद्धी और शक्ती आ गई ॥

प्रश्न ३९—संत सतगुरु की क्या पहिचान है ॥

उत्तर—प्रथम यह पहिचान है कि जो सत्तलोक के बासी हैं उन्हीं की संत पदवी हो सकती है और जो

शब्द मारग का उपदेश करते हों और भेद बतलाते हों और अंतर में आप शब्द स्वरूप हों ॥

दूसरे—जब कोई प्रेमी और अधिकारी खोजी उनके सामने जावे तो उसके सुरत और मन आप से आप सिमटें और ऊपर को चढ़ने लगें और उसका आनंद प्राप्त हो ॥

तीसरे—उनके बचन बहुत ही संक्षेप करके और गहरे और असर वाले हों और सुनने वाला जैसे अधिकार और दरजे का हो उसी घाट से उसकी तसल्ली की जावे और वह क़ायल हो जावे ॥

चौथे—जो बिना बाद बिबाद के सच्चे दिल से प्रतीत ले आवे उसको अंतर में कुछ परचा देवें और आनंद प्राप्त करावें ॥

पाँचवें—जिनकी रहनी मिस्ल कथनी के हो ॥

छठें—जो अपने सब सच्चे सतसंगी और सतसंगिनों की अन्तर और बाहर सम्हाल रखते हों ॥

प्रश्न ४०—संत मत और दूसरे संसारी मतों में क्या भेद है ॥

उत्तर—संसार के और सब मतों में अकसर प्रवृत्ती यानी दुनियादारी और निवृत्ती यानी परमार्थ दोनों का ज़िकर है बल्कि प्रवृत्ती का बहुत, और संत मत में केवल

निवृत्ती का ही ज़िकर है याने सच्चे मालिक का भेद और महिमा और उसके चरनों में प्रेम के साथ सुरत शब्द मारग की कमाई करके पहुँचने की जुगत वर्णन की है और जिन बातों का या ऊपर की रूहानी रचना (लोकों) का बेद उपनिषद और और दूसरे मतों की किताबों में सिर्फ़ गुप्त करके या इशारे में या निहायत संक्षेप के साथ ज़िकर हुआ है संतों ने आप उन बातों या स्थानों को देख कर विस्तार पूर्वक ज़िकर किया है और संतों का सिद्धाँत और मतों के सिद्धाँत से बहुत ऊँचा है और जो कि संत मत में सिर्फ़ अंतरी अभ्यास का मन और सुरत के साथ भेद कहा है और कोई बाहर की रसमें और पूजा की क़ैद नहीं है इस सबब से हर एक मत और गिरोह और मुल्क और हिस्से ज़मीन के आदमी बग़ैर किसी तरह अपने मत की बाहरी रसमें तोड़ने के संत मत में शरीक होकर सच्ची मुक्ती हासिल कर सक्ते हैं, क्योंकि यह मत रूहानी है यानी रूह के उद्धार का इसमें ज़िकर है और रूह सब मनुष्यों की एक सी है और उसके उद्धार की हर एक को बराबर ज़रूरत है ॥

प्रश्न ४१—संत मत में मुवाफ़िक़ और मतों के किताबी अथवा पोथियों के प्रमान वग़ैरह माने जाते हैं या नहीं ॥

उत्तर—संत मत में अव्वल खोजी अपनी आँख और

बुद्धि से जो कुछ कि कहा जाता है अपने अंतर में और कुल जिस्मों में गौर और समझ करके देखले कि क़ानून क़ुदरत का सब जगह यकसाँ होना चाहिये और जब यह समझ खोजी की दुरुस्त हो जावे तब चाहे जिस किताब से जो सच्च संत या सच्चे साध की बनाई है मुताबिक़त कर ले, सिवाय इसके उन मतौं के उसूल से जो सच्चे अभ्यासी आचारजों के जारी किये हुए हैं मुताबिक़त हो सक्ती है पर संतौं का सिद्धाँत और मतौं के सिद्धाँत से नहीं मिल सकता क्योंकि यह सब रास्ते में रह गये और संत धुर स्थान तक पहुँचे और विद्या और बुद्धी के मत वाले और उनके ग्रन्थौं से संत मत के उसूल मुवाफ़िक़ नहीं हो सक्ते हैं। संतौं ने जो कुछ कि कहा है अंतर में क़ुदरत का भेद कहा है और वह भेद हर जगह यकसाँ है और बुद्धिमानौं का मत दुनिया के ज़ाहिरी हाल और कैफ़ियत के मुवाफ़िक़ है असलियत से रूह या किसी और चीज़ों की उनको ख़बर नहीं है और संत अपने बचन में किसी पुरानी बानी या गुज़रे हुए लोगौं के बचन का परमान देना मंजूर नहीं फ़रमाते क्योंकि ऐसा यक़ीन कच्चा होता है और उसका एतबार नहीं और ऐसे समझने वाले लोगौं की समझ बूझ भी नहीं बढ़ती बल्कि औरौं के बचन के आसरे रहते हैं और इसी को टेक कहते हैं और ऐसी टेक संतौं को नापसंद है क्योंकि इसमें जीव का असली फ़ायदा नहीं बल्कि नुक़सान होता है ॥

प्रश्न ४२—सतसंग किस को कहते हैं और वह कितने क़िस्म का है॥

उत्तर—सतसंग दो क़िस्म का है अन्तरमुखी और बाहरमुखी। मालिक के साथ संग करना यानी भजन में बैठ कर शब्दगुरू से मिलना सतसंग अन्तरमुखी है। और सतगुरु वक़्त के दर्शन करना उनका बचन सुन कर उस पर अमल करना या जहाँ वह इजाज़त दें और जहाँ संतों की बानी का पाठ या अर्थ या परमार्थी चरचा होती हो जाना बाहरमुखी सतसंग है। मालूम होवे कि संतों की बानी में महिमा सच्चे मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी की और सुरत शब्द मारग और उसके अभ्यास करने वाले की हालत जो दिन दिन बदलती जाती है और प्रेम प्रीत का सतगुरु के चरनों में और हाल मन और इन्द्रियों के बिकारों का और जतन उनके दूर करने का बर्णन किया है॥

प्रश्न ४३—सतसंगी किस को कहते हैं॥

उत्तर—कुल मनुष्य जिन्हों ने सतगुरु वक़्त से उपदेश लिया हो और सुरत शब्द जोग का अभ्यास करते हों, चाहे वह साधू हों या गृहस्थी, पुरुष हों या स्त्री, सतसंगी कहलाते हैं॥

प्रश्न ४४—साधू और गृहस्थी के अधिकार में कुछ फ़र्क़ है या नहीं॥

उत्तर—संत मत में ज़ाहिरी त्याग और ग्रहण बहुत कम दरजे का समझा गया है। फिर भी जिसके जितने बन्धन इस संसार में कम हैं उतना ही उसको ज़ियादा मौक़ा इस अभ्यास का और आनन्द के प्राप्ती का मिलता है और इस अंग में साधू ज़ियादा अधिकारी हैं पर असल में त्याग और ग्रहण मन से है, जो मन से संसार का त्यागी है उसका दरजा निहायत बड़ा है और वह संत मत को बहुत जल्दी और अच्छी तरह समझ कर पूरा फ़ायदा उठा सक्ता है, चाहे वह गृहस्थ में हो और चाहे बिरक्त, और जो मालिक के चरनों का प्रेम मन में नहीं है तो गेरुवा कपड़े रँग लेना या सिर मुँडा कर घर बार स्त्री पुत्र वग़ैरह को छोड़ देने से संत मत में कोई बड़ाई नहीं समझी जाती है और ऐसे भेषी साधुओं और संसारी ग्रहस्थियों का एक दरजा है बल्कि इस वक्त में राधास्वामी दयाल किसी से उसकी गृहस्थी और रोज़गार नहीं छोड़ाते हैं और फ़रमाते हैं कि गृहस्थ में रह कर अगर शौक सच्चा है तो भजन ज़ियादा आसानी और रस के साथ बन सकेगा॥

प्रश्न ४५—स्त्री और पुरुष अर्थात् मर्द और औरत का यकसाँ अधिकार है या कम ज़ियादा॥

उत्तर—अपने कल्यान और उद्धार की जैसी पुरुष को ज़रूरत है ऐसी ही स्त्री को। और जितनी अकल वग़ैरह पुरुष में होती है कमोबेश उतनी ही स्त्री में भी होती है

बल्कि संत मत में जो प्रेम और भक्ती का मारग है इसमें अकसर औरतें ज़ियादा जल्दी फ़ायदा उठाती हैं क्योंकि उनमें कुदरती प्रेम और भाव अंग ज़ियादा है। इस वास्ते जैसे कि हर एक काम को स्त्री और पुरुष मिल करके करते हैं और शास्त्र में स्त्री को अर्धांगी कहा है इसी तरह संत मत में भी स्त्री और पुरुष का बराबर अधिकार है। और आज कल हुज़ूर राधास्वामी दयाल की ऐसी भारी दया जीवों पर है कि वह स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर उपदेश देते हैं। पुरुष को सतसंगी और स्त्री को सतसंगिन कहते हैं। और बाज़ी इज़्ज़तदार नेक और पाक स्त्रियाँ इस वक्त में बहुत ऊँचे दरजे पर पहुँची हुई हैं॥

प्रश्न ४६—सुरत शब्द जोग का अभ्यास किस तरह किया जाता है॥

उत्तर—जो शब्द ऊँचे देश से नीचे देश को घट में आ रहा है और जिसकी आवाज़ हर एक मनुष्य के अन्तर में हर वक्त जारी है उसमें सुरत यानी रूह को साथ तवज्जह के जोड़ कर ऊपर को चढ़ाते हुए पिंड और ब्रह्मांड के पार दयाल देश में पहुँचाना सुरत शब्द जोग का अभ्यास करना है॥

प्रश्न ४७—जब शब्द की धार नीचे आ रही है तो उसके सहारे सुरत की धार ऊपर को किस तरह चढ़ेगी॥

उत्तर—जैसे मछली जल की धार में जो किसी ऊँचे स्थान से नीचे को गिर रही हो उस धार के सहारे ऊपर को चढ़ जाती है। मुफ़स्सिल भेद इसका सतगुरु वक़्त से या उनकी इजाज़त लेकर किसी सच्चे अभ्यासी सतसंगी से मालूम हो सकता है॥

प्रश्न ४८—उपदेश की क्या रीति है॥

उत्तर—उपदेश की कोई ख़ास रीति नहीं है। जिस वक़्त कोई अधिकारी जीव यानी सच्चा शौक़ वाला आवे उसी वक़्त उसके सामने मत का निर्णय किया जाता है जो उसकी समझ में मत अच्छी तरह आ जावे तो क़रीब पौन घंटे में उपदेश दिया जाता है। और राधास्वामी दयाल की दया से यहाँ तक आसानी है कि जिस जीव को मन से सच्चा शौक़ हो और उसको किसी सबब से आगरे में आने का मौक़ा न मिल सके तो उसको लिख कर उपदेश पहिले दरजे के अभ्यास का भेज दिया जाता है। और दरजे दो हैं, पहिला सुमिरन और ध्यान दूसरा भजन॥

प्रश्न ४९—अभ्यास की क्या रीति है॥

उत्तर—भजन यानी अन्तर में आकाशी शब्द का सरवन करना और उसके आसरे सुरत का चढ़ाना। ध्यान यानी अंतर में स्वरूप पर मन और दृष्टि और सुरत को जमाना। और सुमिरन यानी ज़बानी दिल से नाम की याद करना। यह तीनों अभ्यास की जुक्ती हैं। जो पूरा अधिकारी है उसके वास्ते भजन मुख्य

और ध्यान सुमिरन गौन अंग में, और उससे कमतर के वास्ते ध्यान या सुमिरन मुख्य और भजन गौन अंग में समझना चाहिये, या यों कहो कि जो पहिले दरजे के हैं वह मन और सुरत को एकाग्र करके यानी अभ्यास के वक्त सब अन्तरी और बाहरी ख़यालों और कामों को मन से हटा कर भजन यानी शब्द के सुनने में लगें और जो दूसरे दरजे के हैं, वह भजन के वक्त मन और सुरत को एकाग्र करने के वास्ते पहिले थोड़ी देर सुमिरन और ध्यान करें और फिर भजन में लगें, और दोनों को चाहिये कि फ़ुरसत के वक्त संतों की बानी का थोड़ा पाठ अर्थ सहित करें और उसको खूब सोच विचार कर समझें और जिस क़दर हो सके उस पर अमल करें। जो तीसरे दरजे के हैं वह संतगुरु वक्त की सेवा और सतसंग बाहरी करें और सुमिरन और ध्यान भी जिस क़दर बन सके मन और चित्त एकाग्र करके करें और संत बानी का पाठ समझ समझ कर करें और जिस क़दर हो सके उन बचनों पर अमल भी करें, मुफ़स्सिल भेद इसका सतगुरु वक्त से मिल सक्ता है और वेही हर एक के दरजे के हाल की जाँच कर सक्ते हैं॥

प्रश्न ५०—सेवा किस को कहते हैं॥

उत्तर—सतगुरु वक्त की आज्ञा में सच्चे मन से चलना और जो जुगत वह बतावें उसका अन्तर अभ्यास चित्त

लगा कर करना अन्तरी सेवा है और चित्त लगा कर सतगुरु और साध का सतसंग करना और बानी का पाठ करना और सुनना और सतगुरु और सतसंगियों यानी साधना करने वालों की बाहर की सेवा जब जब जैसे मिल जावे उसको उमंग और प्रेम के साथ करना यह बाहरी सेवा है ॥

प्रश्न ५१—सच्चे परमार्थी की क्या पहिचान है ॥

उत्तर—जिसके मन में मालिक से मिलने की सच्ची चाह और बिरह हो, जो अन्तर में सिवाय मालिक के किसी पर भरोसा न रक्खे, जो सिवाय सच्चे मालिक और सतगुरु के किसी दूसरे का आसरा न रक्खे, जो मालिक के दरबार तक पहुँचने के जतन को सब से मुख्य समझे और इस जतन में जो ज़रूरत हो तो संसारी सब पदार्थों को भेंट कर दे—

विषयन से जो होय उदासा । परमारथ की जा मन आसा ॥ १ ॥
धन संतान प्रीति नहिं जाके । जगत पदारथ चाह न ताके ॥ २ ॥
तन इन्द्री आशक्त न होई । नींद भूख आलस जिन खोई ॥ ३ ॥
बिरह बान जिन हिरदे लागा । खोजत फिरे साध गुरु जागा ॥ ४ ॥

प्रश्न ५२—सच्चे परमार्थी अभ्यासी का कैसा बरताव होना चाहिये ॥

उत्तर—कम बोलना, कम खाना, कम सोना, संसारी कामों में सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बरताव रखना और उस बरतावे को सचाई के साथ बरतना । मालिक का भजन, सुमिरन और ध्यान निहायत प्रेम और शौक़

और सचौटी के साथ जितनी दफ़ा और जितनी देर बन सके ज़रूर करना। सतगुरु वक़्त की सेवा उनकी मरज़ी के मुवाफ़िक़ सच्चे मन से सच्चा भाव लेकर करना। माँस, मदिरा और दूसरी नशे की चीज़ों को काम में हरगिज़ न लाना। जहाँ तक हो सके सतसंग में हुज़ूर राधास्वामी दयाल के हाज़िर होना और जो ऐसा सतसंग न मिल सके तो अकेले बानी का थोड़ा पाठ विचार २ कर और उसको अपने ही ऊपर घटा कर ऐसा ख़्याल करके कि सतगुरु हमसे ही कह रहे हैं करना। कुसंग यानी संसारियों के संग से हमेशा बचते रहना। समय यानी फ़ुरसत के वक़्त को व्यर्थ न खोना, जितना और जहाँ तक जल्दी हो सके बाहरमुखी बातों से हट कर अन्तरमुख बृत्ती करना और फ़ज़ूल और नामुनासिब चाहें संसार के धन, मान और भोगों की प्राप्ती के वास्ते न उठाना॥

प्रश्न ४३—अंतरमुखी और बाहरमुखी बृत्ती किस को कहते हैं॥

उत्तर—सुरत जो इन्द्री द्वारे बाहर के संसारी पदार्थों में लिपायमान हो रही है उसको बाहरमुखी बृत्ती कहते हैं, उसको अंतर में उलटाना और संसारी पदार्थों से हटाना और मालिक के चरनों में सच्चे हो कर प्रेम प्रीत और भाव करना और उसके नाम और धाम और स्वरूप की हर वक़्त याद करना इसको अंतरमुखी बृत्ती कहते हैं॥

मालिक यानी शब्द में लगावे और उसके रस और आनंद में हरदम भीना और मगन रहे वह अन्तरमुखी प्रेम है। सतगुरु वक्त के बचन और बानी बिलास और लीला देख कर मगन होना और उनके बचन का मन में असर और कम से कम कुछ देर तक ठहराव होना और दिल और दीदे से उन का दर्शन करना और उमंग से सेवा करना यह प्रेम बाहरमुखी है॥

प्रश्न ५६—कितने दिनों तक अभ्यास करने से अन्तर के स्थानों में सुरत पहुँच सक्ती है॥

उत्तर—इसका नेम नहीं है। यह बात सच्चे शौक़ सच्चे प्रेम और सफ़ाई और निरमलता दिल और मिहनत पर मुनहसर है। जो उत्तम अधिकारी हो तो वह बात जो बरसों में प्राप्त होनी कठिन है दिनों में हासिल हो सक्ती है। फिर भी आम तरह पर बीच के दरजे के सच्चे शौक़ वाले को थोड़े दिनों में कुछ कुछ रस और आनंद आने लगेगा और तीन चार बरस अभ्यास करने से उस को आप अन्तर में मालूम हो जावेगा कि कितने दिनों में किस स्थान पर उसकी सुरत गौन अंग से पहुँच सक्ती है॥

प्रश्न ५७—क्या सबब है कि बाज़े अभ्यासियों को बहुत मुद्दत में भी कुछ फ़ायदा नहीं होता॥

उत्तर—वह बिधि पूर्बक और पूरे परहेज़ के साथ सतसंग और अभ्यास नहीं करते हैं। असल में उन को अभ्यासी भी नहीं कहना चाहिये, वह बिल्कुल बाहरमुख

और दिखलावे के आदमी हैं। नहीं तो सच्चा अभ्यास तो ज़रूर और बहुत जल्दी अपना असर और फ़ायदा दिखलाता है। अभ्यासी यानी सतसंगी चार क़िस्म के होते हैं। प्रथम जो पोथी में पढ़ कर या ज़बानी सुनकर सारी बातें याद यानी कंठ कर लेते हैं, जैसे कोई आदमी बैदक की किताब पढ़ कर या उसका हाल ज़बानी सुनकर सिर्फ़ नुसख़े याद कर ले। दूसरे जो सिर्फ़ दिखलावे के वास्ते दो चार मिनिट या ज़ियादा देर तक आँखें बंद करके बैठ जाते हैं, जैसे कोई दवाई मुँह में डाल कर कुल्ली कर दे। तीसरे जो मिहनत करके अभ्यास करते हैं पर हमेशा या कभी कभी बिषयों आदिक में आशक्त हो जाते हैं, जैसे कोई दवा पी भी ले पर पूरा परहेज़ न करे। चौथे जो अभ्यास मिहनत और सच्चे शौक़ और प्रेम के साथ करते हैं और बिषयों आदिक से हमेशा बचते रहते हैं, जैसे कोई दवाई भी पीवे और पूरा परहेज़ भी करे। इस वास्ते चौथे क़िस्म के अभ्यासी पूरा फ़ायदा उठा सक्ते हैं॥

प्रश्न ५८—अभ्यास शुरू करके छोड़ देने या पूरा परहेज़ न करने में क्या नुक़सान है॥

उत्तर—सच्चा अभ्यास जो चौथी क़िस्म में लिखा है एक बार भी हो जावे तो फिर कभी नहीं छूट सक्ता। पर जिन को सच्चा प्रेम या लगन नहीं है और वह कुछ दिनों में अभ्यास करना छोड़ दें तो उनकी रूहानी

तरक्की बंद हो जावेगी और आनंद जाता रहेगा पर जितना अभ्यास कर चुके हैं उसका फल ज़रूर मिलेगा और जिस परहेज़ को जितना तोड़ेंगे उतने ही अंदाज़े से कम आनंद प्राप्त होगा ॥

फ़िहरिस्त राधास्वामी मत की पुस्तकों की

॥ नागरी ॥

पुस्तक	क़ीमत
सार बचन छन्दबन्द (हुज़ूर महाराज के पाठ की पुस्तक से शुद्ध करके नया छपा है	... ३)
सार बचन वार्तिक	...१॥)
प्रेमबानी पहिला भाग	... २)
प्रेमबानी दूसरा "	... २)
प्रेमबानी तीसरा "	... २)
प्रेमबानी चौथा "	... ॥।)
प्रेमपत्र पहिला भाग	... ३)
प्रेम पत्र दूसरा "	... ३)
प्रेमपत्र तीसरा "	... ३)
प्रेमपत्र चौथा "	... ३)
प्रेम पत्र पाँचवाँ "	... ३)
प्रेमपत्र छठा "	... २)
सार उपदेश	... ॥)
निज उपदेश	... ॥)
प्रेम उपदेश	... ॥)
राधास्वामी मत संदेश	... ॥)
राधास्वामी मत उपदेश	...।=)
गुरु उपदेश	... -)॥

पुस्तक	क़ीमत
प्रश्नोत्तर संत मत	...।=)
बचन महात्माओं के	... ।)
जुगत प्रकाश	... ॥।)
संत संग्रह भाग पहिला	... ॥)
संत संग्रह भाग दूसरा	... ॥)
नाम माला	... ।)
बिनती व प्रार्थना	... ।)
प्रेम प्रकाश	... ।)
भेद बानी पहिला भाग	... ।-)
भेदबानी दूसरा "	... ।)
भेदबानी तीसरा "	... ।)॥
भेदबानी चौथा "	... ।-)
जीवन-चरित्र स्वामी जी महाराज	... ॥)
महाराज सा० के बचन पहिला भाग	॥)
" " दूसरा "	॥)
" " तीसरा "	॥)
महा० सा० के बचन चौथा भाग	॥)
महा० सा० के बचन पाँचवाँ भाग	॥)
हुज़ूर महाराज का जीवन चरित्र	॥=)

॥ उर्दू ॥

पुस्तक	क़ीमत
सार बचन नसर	... १)
सार उपदेश	... ॥)
निज उपदेश	... ॥)
राधास्वामी मत संदेश	... ॥)
कैटिकिज़म यानी सवाल व जवाब	...।=)
सहज उपदेश	...।=)

॥ बँगला ॥

पुस्तक	क़ीमत
सार उपदेश	... ॥)
राधास्वामी मत संदेश	... ॥)

॥ अंग्रेज़ी ॥

पुस्तक	क़ीमत
राधास्वामी मत प्रकाश	...॥=)
डिस्कोर्स	...२॥)
सोलेस	... ॥)

पता—

राधास्वामी सतसंग

इलाहाबाद